दादी की दरियादिली

ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

मैंने लगभग 40 वर्ष तक उन्हें समीपता से देखा, उनकी महानताओं को निहारा, उनके प्रेम व सम्मान का रसपान किया, उनकी शीतल छाया में जीवन को शीलत किया, उनकी मार्ग प्रदर्शना में अपने यज्ञ सेवा के कार्यों को सम्पन्न किया। वे महानता की चेतन प्रतिमूर्ति थीं, उनका जीवन ही एक महान तीर्थ था, वे यहीं पर विश्व महाराजन समान एक महान राजऋषि थीं। पवित्रता की इस महान देवी को जैसा मैंने देखा, उसकी कुछ झलकियां यहां प्रस्तुत हैं...

गुजरात के तत्कालिन मुख्यमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी के साथ दादी प्रकाशमणि।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ बातचीत करते हुए दादी प्रकाशमणि।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के साथ दादी प्रकाशमणि व अन्य।

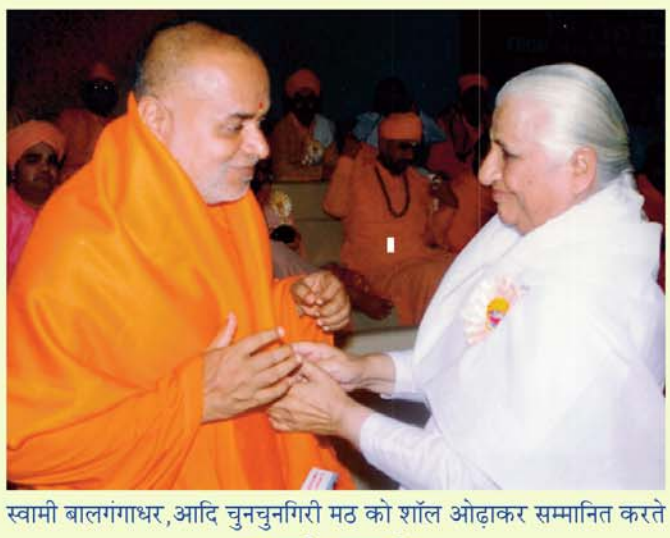

स्वामी बालगंगाधर,आदि चुनचुनगिरी मठ को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए दादी प्रकाशमणि।

सवेरे मुरली क्लास चल रही है, 7 बजे हैं। सारे भारत से वरिष्ठ भाई योग-भट्ठी करने आये हैं... किसी प्रसंग वश दादी ने कहा, सभी गर्म-गर्म गुलाब जामुन खायेंगे...? उत्तर तो था ही उत्साहवर्धक...बस वहीं मुझे कहा, सूर्य उठो और सबके लिए गर्म-गर्म गुलाब जामुन बनाओ। उनका आदेश तो ईश्वरीय आदेश था और 7:30 बजे गर्म-गर्म गुलाब जामुन क्लास में वितरित होने लगे। दादी के इस पुनीत प्यार व अपनेपन को देखकर सभी गद्‌गद् हो गये।

यह सद्‌गुरु का दर है

वे कहा करती थीं, जिस घर में मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। भगवान के घर सबसे ज़्यादा मेहमान आते हैं, यह सद्‌गुरु का दर है। वे मेहमान भी भगवान के बच्चे हैं, पवित्र ब्राह्मण आत्माएं हैं व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरी करनी है। वे चाहती भी यही थीं कि हमारे पास सदा ही बहुत मेहमान रहें, घर खाली न रहे। मेहमान ही हमारे घर का श्रृंगार हैं। वे सबसे मिलतीं बुलातीं, सबको पारिवारिक व अपनेपन की भासना देती थीं और सबमें शक्ति भी भरती थीं।

दादी की दरियादिली

वे दरियादिल थीं। जब यज्ञ छोटा था तो भी वे उदारता का परिचय देती थीं और जब यज्ञ विशाल हुआ तो उनका दिल भी और ही विशाल हो गया। वे यज्ञ वत्सों का ध्यान रखतीं, उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेतीं, उन्हें क्या चाहिए - यह पूछतीं और वर्ष में कई बार सबको ताकतवर चीज़ें खिलाने के साथ-साथ विभिन्न अवसरों पर सबको सौगातें भी वितरित करती थीं ताकि किसी की भी बुद्धि दुनिया में न जाए।

एक बार किसी ने उनसे बुरा व्यवहार किया। सभी देखने वालों के तेवर चढ़ गये। दादी ने सभी को शान्त किया। बाद में एक बुज़ुर्ग व्यक्ति दादी से मिले और कहा, दादी जी! हमसे उसका व्यवहार सहन नहीं होता, इस नालायक को यज्ञ से निकाल दिया जाए। दादी जी मुस्कराई और कहा, नहीं, दादी को तो कुछ हुआ ही नहीं। सब बाबा के बच्चे हैं... उस बुज़ुर्ग के नयन भर आये दादी की सहनशीलता को देखकर।

तत्कालिन राष्ट्रपति महामहिम डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

उनकी उपस्थिति मात्र से हल्कापन

वे सच्ची कर्मयोगी थीं। सारा दिन कर्म करके भी वे रात को ऐसी हल्की दिखती थीं कि मानो उन्होंने कुछ किया ही न हो। उनके व्यक्तित्व की एक बात विशेष नोट करने वाली है कि वे जहां भी जाती थीं, उनसे डरकर लोग छिप नहीं जाते थे, बल्कि उनके चारो ओर इर्द-गिर्द खुशी से इकट्ठे हो जाते थे। उनकी उपस्थिति सभी को हल्का करने वाली व सभी की समस्याओं का समाधान करने वाली होती थी।

वे सच्चे अर्थों में त्यागी थीं

उनका त्याग ऐसा था कि वे ध्यान रखती थीं कि मेरे लिए ज़्यादा खर्च न हो। वे ध्यान रखती थीं कि मुझे ही सब फॉलो करेंगे। अंत तक भी उन्हें बहुत ध्यान रहा कि उनकी कार डीज़ल की ही हो। त्याग व सादगी से भरा उनका जीवन सब पर अमिट छाप छोड़ता था। हम जानते हैं कि बिना त्याग के तपस्या नहीं होती और क्योंकि वे अपनी गहन तपस्या पर सूक्ष्म रूप से ध्यान देती थीं, इसलिए उन्होंने त्याग को अपना तेज बना लिया था।

क्योंकि वे इस ईश्वरीय परिवार की दादी थीं, बड़ी दादी, वे सबके खाने का व सबको बहलाने का भी पूरा ध्यान रखती थीं। सबको पिकनिक पर ले जाना, सबका बाहर भी घूमने का ध्यान रखना, सबको अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाना - यह उनका स्वभाव था। सभी ने उनको उदारचित्त रूप में ही देखा, यद्यपि वे ध्यान रखती थीं कि कुछ भी वेस्ट न हो।

वे पवित्रता की देवी थीं

उनकी पवित्रता की शक्ति उनके चेहरे की निर्मलता से अभिव्यक्त होती थी। एक बार मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन चल रहा था, उसमें अनेक महामण्डलेश्वर आये थे। दादी उनके साथ मेडिटेशन हॉल में जा रही थीं। इसी मध्य एक महामण्डलेश्वर दादी जी का हाथ अपने हाथ में लेकर चलने लगा। वहां पहुंच कर उसने सभा में अपना अनुभव सुनाया कि अभी-अभी दादी के हाथ के स्पर्श से मुझे उनके महान पवित्र होने का विश्वास हो गया है। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संस्था की चीफ इतनी महान पवित्र आत्मा हैं, इससे सिद्ध होता है कि ये संस्था सर्वोच्च शिखर पर पहुंचेगी।

उनके देह में अनेक बीमारियां आईं, परंतु कभी उनके मुख से आह... या हाय... नहीं निकला। वे सहज ही सभी बीमारियों को पार कर लेती थीं। कई बार उनके ऑपरेशन भी हुए, परंतु शीघ्र ही वे पुनः सेवा-क्षेत्र पर उपस्थित हो जाती थीं। अंतिम बीमारियों में भी वे पूर्णरूपेण योग-युक्त व अशरीरीपन की स्थिति में रहीं। उनकी बीमारियां भी दूसरों के लिए सेवा का साधन बन जाती थीं। बीमारियों में कभी भी किसी ने उनको चिड़चिड़ा होते नहीं देखा। वे पेशेन्ट रूप में कभी नहीं रहीं बल्कि सबको पेशेन्स (धैर्य) देने वाली रहीं।

सुमेरू मठ के नरेन्द्र स्वामी शंकराचार्य के साथ दादी प्रकाशमणि व दादी जानकी

वे अति निरहंकारी थीं। सबको दिल से सम्मान देती थीं। वे दूसरों की योग्यताओं को सम्मान देती थीं व उनका सेवाओं में उपयोग करती थीं। स्वयं को नम्रचित्त बनाने में उन्होंने ब्रह्माबाबा को फॉलो किया, उनके चलने से, देखने से व व्यवहार से कहीं भी अहं दृष्टिगोचर नहीं होता था। अनेक बार वे स्वयं हम सबके साथ अहमदाबाद तक बस में यात्रा करके गईं। उन्हें सबके साथ रहना अच्छा लगता था। बहुत दिन पूर्व की बात है, उनका टिकट प्रथम श्रेणी में था, व हम सब द्वितीय श्रेणी में थे, उन्होंने टी.टी. को कहकर हम सबको अपनी केबिन में बुला लिया। ऐसी सिम्पल और हम सब के लिए एक सैम्पल थीं हमारी दादी माँ।